फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

काम होगा तो मिलेंगे ही। मिलना तो बिना काम के होता है।

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी फरीदाबाद - 121001

नई सीरीज नम्बर 241 1/- जुलाई 2008

चक्रव्यूह मरने-मारने का: ऊर्जा, अधिक ऊर्जा (2)

★ स्वयं को दोष देना। अपने को खुद काटना। व्यक्ति का प्रतिदिन कई-कई बार मरना।

★ आस-पास वालों को दोष देना। ईर्द-गिर्द वालों की टाँग खींचना। मनमुटाव और चुगली का बोलबाला।

★ इस-उस समूह को दोषी ठहराना। समूहों का एक-दूसरे के विरुद्ध लामबन्द होना। अनेकानेक प्रकार के गिरोहों में टकरावों का बढ़ते जाना।

उपरोक्त को विश्व में वर्तमान की एक झलक कह सकते हैं। मौलिक परिवर्तन की आवश्यकता समवेत स्वर धारण कर रही है।

क्या है मौलिक परिवर्तन? कई पीढियों से हम इस प्रश्न से जूझ रहे हैं। अनगिनत प्रयास किये जा चुके हैं, अनेक कोशिशें जारी हैं। मन्थन, सामाजिक मन्थन आज विश्व-व्यापी है। इस में एक योगदान के लिये यहाँ यह चर्चा कर रहे हैं।

ऊर्जा के कई रूप हैं। यहाँ हम काम के सन्दर्भ में ऊर्जा की बातें करेंगे। ☞

चिड़िया काम नहीं करती। मनुष्य भी चिड़िया से भिन्न नहीं थे। सारतः यह काम है जिसने हमें अन्य जीव योनियों से अलग किया है। और, यह काम की प्रकृति रही है कि काम अधिक काम की माँग करता है।

काम के लिये ऊर्जा चाहिये। इसलिये ऊर्जा की माँग बढती जाती है। काम और ऊर्जा, अधिक काम-अधिक ऊर्जा एक चक्रव्यूह का निर्माण करते हैं। ☞

आरम्भ में काम के लिए ऊर्जा की प्राप्ति माँसपेशियों के दोहन से हुई। बढते काम के लिये बढती ऊर्जा की पूर्ति लकड़ी-कोयला, गैस-तेल, जल-सौर-वायु के दोहन की राह परमाणु ऊर्जा में पहुँच चुकी है। पर्यावरण प्रदूषण तो संग-संग आया ही है, हालात पृथ्वी पर जीवन मिटने के बन रहे हैं।

काम पर प्रश्न फिर उठायेंगे। कोयला, गैस-तेल, बाँधों से बिजली वाली ऊर्जा की चर्चा यहाँ नहीं करेंगे। ऊर्जा जो बढती आवश्यकता की पूर्ति कर देगी और जिसे साफ ऊर्जा के तौर पर प्रचारित किया जा रहा है उस परमाणु बिजली की वास्तविकता की एक झलक यहाँ देखिये। सामग्री मजदूर समाचार के मई 2006 अंक से ली है।

एटम बमों से अधिक खतरनाक हैं परमाणु बिजलीघर

झूठ बोलना और छिपाना सरकारों के चरित्र में है। अर्ध-सत्य सरकारों की सामान्य क्रिया का अंग है। आडम्बर और प्रतीक –दिन में मोमबतियाँ जला कर मृतकों को श्रद्धाँजलि और शान्ति के लिये प्रार्थनायें दमन-शोषण के तन्त्रों के कर्णधारों के कपट के संग-संग उनकी असहायता की भी अभिव्यक्ति हैं।

– 1914-1919 की महा मारकाट के बाद : और युद्ध नहीं ! 1939-45 की उससे भी महा मारकाट के बाद : आगे कोई युद्ध नहीं ! हीरोशिमा तथा नागासाकी में एटम बमों से हमले के बाद : फिर कभी नहीं .... एटम बम बनने ही नहीं देने, बन चुके एटम बमों को समाप्त करना ! और ..... और शान्ति/सुरक्षा के नाम पर एटम बमों, हाइड्रोजन बमों, भाँति-भाँति के परमाणु बमों के सरकारों द्वारा भण्डार बनाना। शान्ति ध्वज की वाहक भारत सरकार में सर्वसम्मति से उस व्यक्ति को राष्ट्रपति बनाया गया है जिसकी एटम बमों तथा उनके लिये वाहक वाहनों के निर्माण में अग्रणी भूमिका रही है। अमरीका-वमरीका सरकारों की बात छोड़िये, भारत सरकार द्वारा एटम बमों से युद्ध की तैयारी की एक झलक के लिये सेना के जनरलों के हाल ही में हुये सम्मेलन के बाद के प्रचार पर एक नजर डालिये : भारत सरकार ने बड़े पैमाने पर परमाणु और जैविक युद्धक कमान केन्द्रों की स्थापना को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुये स्वीकृति दे दी है ; 30 प्रतिशत टैंक परमाणु विकिरण के माहौल में काम करने के लिये तैयार किये जा रहे हैं; एटम बमों से युद्ध के लिये भारत सरकार की सेना ने अपनी योजना तथा रणनीति बनाने के उद्देश्य से कई स्तरों पर अभ्यास किये हैं ; सेना तीन विशिष्ट प्रक्षेपास्त्र युनिटों की स्थापना कर चुकी है ; सेना में परमाणु हथियार शामिल ; सेना को बड़े पैमाने पर परमाणु विकिरण रोधी पोशाकों की पूर्ति के लिये उनका निर्माण आरम्भ; जनरलों के सम्मेलन के अन्तिम दिन भारत के शीर्षस्थ परमाणु और जैविक वैज्ञानिकों ने जनरलों को परमाणु सुरक्षा कवच के इस्तेमाल तथा परमाणु कमान केन्द्रों की स्थापना के बारे में बारीकी से जानकारी दी ; वैज्ञानिकों ने जनरलों को परमाणु हथियारों की दिशा में भारत सरकार की प्रगति से अवगत कराया। (जानकारी 24.4.2006 के 'पंजाब केसरी' से)

– चिकित्सा के लिये, अनाज उत्पादन में वृद्धि के वास्ते, बिजली के लिये अनुसन्धान-प्रयोग-निर्माण उर्फ "परमाणु ऊर्जा का शान्तिपूर्ण उपयोग" सरकारों के एटम बमों के निर्माण के लिये एक आवरण रहा है। लेकिन मण्डी-मुद्रा के दबदबे में तीव्र से तीव्रतर हो रहा पृथ्वी का दोहन मानवों के शोषण के लिये परमाणु ऊर्जा को अधिकाधिक उल्लेखनीय भूमिका में लाने लगा। परमाणु ऊर्जा से बिजली का निर्माण बेहद खतरनाक है, कई पीढियों तक घातक प्रभाव डालता है, परमाणु बमों का सतत विस्फोट-सा है (कानून अनुसार शोषण के समान है) परन्तु सरकारें तथ्यों को छिपाती रही और बढती सँख्या में परमाणु बिजलीघरों का निर्माण. ... लेकिन 26 अप्रैल 1986 को चेरनोबिल परमाणु बिजलीघर में हुये विस्फोट का यूरोप-व्यापी असर पड़ा। रूस, यूक्रेन तथा बेलारूस में पचास लाख लोग विकिरणों की चपेट में आये। पूरे पश्चिमी यूरोप में विकिरणों के धुँए का एक बादल बन गया था। एक लाख से अधिक कैंसर के अतिरिक्त मामले.... 1986 में सोवियत संघ के राष्ट्रपति रहे गोर्बाचोव ने अब, बीस वर्ष बाद "प्रायश्चित" के लिये विश्व की सशक्त सरकारों से अपील की है कि कम से कम 50 बिलियन डालर (करीब ढाई लाख करोड़ रुपये) की राशि वे चेरनोबिल परमाणु बिजलीघर विस्फोट के पीड़ितों के लिये दें ताकि उनके लिये शुद्ध (विकिरण रहित) पानी और हवा का प्रबन्ध किया जा सके। यूरोप में 1986 के बाद परमाणु बिजलीघरों के विरोध ने व्यापक रूप लिया। परमाणु बिजलीघरों का कूड़ा-कचरा भी इस कदर खतरनाक है कि जर्मनी में लोग परमाणु बिजली घर के कूड़े-कचरे से लदी ट्रेन को अपने-अपने क्षेत्र से गुजरने से रोकने के लिये पुलिस से भिड़े..... चेरनोबिल परमाणु बिजलीघर की घटना से सामने आये खतरों ने परमाणु बिजलीघर बन्द करने के लिये सरकारों पर दबाव बनाया और नये परमाणु बिजलीघरों के निर्माण पर लगाम लगी.... लेकिन फिर नये सिरे से "साफ" ऊर्जा की, परमाणु बिजलीघरों की वकालत खुल कर होने लगी है और भारत सरकार के राष्ट्रपति अग्रणी वकीलों में हैं। एटम बम व मिसाइल निर्माण में प्रमुख भूमिका निभाने वाले यह वैज्ञानिक तथा शिक्षक भारत में इस समय परमाणु बिजलीघरों में बनती 2720 मेगावाट बिजली को बढा कर 50 हजार मेगावाट करने के लिये प्रचार अभियान में जुटे हैं।

उह कल्पना ! (बाकी पेज दो पर)

अन्तरिक्ष अभियान सरकारों के सैन्य अभियान हैं। यह अभियान कम्पनियों के औजार भी हैं। 'कोलम्बिया' अन्तरिक्ष यान से पहले

दर्पण में चेहरा–दर–चेहरा

चेहरे डरावने हैं.... आईना ही नहीं देखें या फिर हालात बदलने के प्रयास करें?

युनचैंग रोटोग्रेव्यूर मजदूर : "प्लॉट 9 बी सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में प्रिन्टिंग रोलर बनते हैं और यहाँ काम करते 83 वरकरों में 34 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ.। एक रसोइया और 16 मैनेजर स्तर के चीन सरकार के नागरिक फैक्ट्री में ही बने वातानुकूलित कमरों में रहते हैं। पाँच मिनट देरी से पहुँचने पर आधे दिन के पैसे काट लेते हैं। एक दिन ड्युटी पर नहीं पहुँचने पर तीन दिन ड्युटी किये के पैसे काट लेते हैं – फोन पर कारण बता देने के बाद भी। चौदह मजदूरों को सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी नहीं, 3000-3200 रुपये तनखा। ओवर टाइम दिखाते ही नहीं जबकि महीने में 20 से 200 घण्टे होता है, भुगतान डेढ की दर से। भोजन के लिये स्थान नहीं, मशीनों के पास बैठ कर रोटी खाना। पीने का पानी साफ नहीं, ठण्डा नहीं। लैट्रीन गन्दी। हम मजदूरों द्वारा आवाज उठाने पर संसदीय सचिव के भाई के आदमी ने 12.11.07 को लिखित समझौता करवाया। दिवाली पर बोनस में 1000 रुपये दिये.... समझौता लागू करवाने के लिये हम मजदूरों ने दबाव डाला तो 13 जून को हमें जबरन फैक्ट्री से बाहर निकाल दिया। कम्पनी हमें हड़ताल पर बताने लगी – पुलिस और श्रम विभाग अधिकारी खुल कर कम्पनी के पक्ष में आ गये। एक बरखास्त, 4 निलम्बित, 3 वैसे ही बाहर कर दिये.... 24 जून से हम ने फैक्ट्री में काम शुरू कर दिया।" **एन.सी.बी. श्रमिक :** "मथुरा रोड़ पर गुडईयर फैक्ट्री के सामने केन्द्र सरकार की सीमेन्ट अनुसन्धान संस्थान है। यहाँ सन् 2001 तक कैजुअल वरकर संस्थान स्वयं भर्ती करती थी और तब 2500 रुपये मासिक वेतन देती थी। सन् 2002 से ठेकेदारों के जरिये वरकर रखने लगे और ठेकेदार दैनिक वेतन के हिसाब से महीने में तनखा देते हैं। संस्थान में शनिवार और रविवार की छुट्टी रहती है। इसलिये सुरक्षा गार्डों, माली और सफाई कर्मियों को छोड़ कर बाकी ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को महीने में 21-22 दिन के पैसे मिलते हैं। महीने में 2700-2800 रुपये तनखा बनती है जिसमें से ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काट लेते हैं। होली-दिवाली की छुट्टियों की दिहाड़ी भी नहीं देते। संस्थान में सीमेन्ट व निर्माण सामग्री पर अनुसन्धान होता है और पाकिस्तान, श्रीलंका, बंगलादेश, अफगानिस्तान से भी लोग प्रशिक्षण लेने आते हैं।"

मैटल कोटिंग कामगार : "मेवला महाराजपुर में जोतिन्द्रा स्टील के पीछे स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। साप्ताहिक छुट्टी नहीं। रोज 12 घण्टे पर 30 दिन के हैल्परों को 3500 और ऑपरेटरों को 5100 रुपये देते हैं।"

ब्ल्यू स्टैम्पिंग एण्ड फोरजिंग वरकर : "प्लॉट 10 व 12 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 2200 और ऑपरेटरों की 3500-5000 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती 35-40 की ही थी, अब ठेकेदारों के जरिये रखे 250 मजदूरों की फोटो खींची हैं। तीन सौ मजदूरों के लिये मात्र एक लैट्रीन है, जाम हो जाती है।" **शशि सर्विस मजदूर :** "प्लॉट 5 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 10-11 महिला मजदूरों की तनखा 1700 रुपये। पुरुष हैल्परों की तनखा 1900-2100 और ऑपरेटरों की 3000 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. 35 मजदूरों में 5 की ही हैं।"

ग्रेविटास श्रमिक : "प्लॉट 60 सैक्टर-59 स्थित फैक्ट्री में 10 स्थाई मजदूर हैं और 140 को ठेकेदारों के जरिये रखा है। हैल्परों की तनखा 2500 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

क्लच ऑटो कामगार : "12/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में हम कैजुअल वरकरों के साथ बहुत दुभान्त की जाती है। लोहे और रसायनों का काम है – स्थाई मजदूरों को सुरक्षा के लिये सेफ्टी जूते देते हैं पर कैजुअलों को नहीं। चोट लगने पर हम फस्ट एड जाते हैं तो पट्टी करने में आनाकानी करते हैं और बदतमीजी करते हैं। हमारी तनखा से ई.एस.आई. के पैसे काटते हैं पर कार्ड नहीं देते – अपने पैसों से हमें प्रायवेट में इलाज करवाना पड़ता है। हमारे साथ सुपरवाइजर बदतमीजी करते हैं। केमिकल लगे हाथों से काम करना पड़ता है – स्थाई मजदूरों को हाथ धोने के लिये साबुन देते हैं पर हम कैजुअलों को साबुन नहीं देते। वही, बल्कि ज्यादा काम के लिये हमारी तनखा स्थाई मजदूरों से बहुत कम है और कैन्टीन में स्थाई को थाली दो रुपये में तथा हमें 6 रुपये में। हमें मई की तनखा 17 जून को जा कर दी।"

कैनन इण्डिया वरकर : "प्लॉट 79 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों को 12 घण्टे रोज काम पर 30 दिन के 3200 रुपये। तनखा हर महीने देरी से – मई की 14 जून को दी।" **कर्मा इंजिनियर्स मजदूर :** "प्लॉट 5 सैक्टर-5 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से साँय 7 की शिफ्ट है। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। फैक्ट्री में काम करते 125 मजदूरों में से 10-12 ऑपरेटर ही कम्पनी ने स्वयं भर्ती किये हैं और उनकी ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे 115 मजदूरों की तनखा इधर मई से 2800-3000 रुपये की है।" **प्रिम पोलीमर श्रमिक:** "प्लॉट 67 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 30 महिला मजदूरों की तनखा 1800 रुपये है। ड्युटी सुबह 8 से रात 8 की है और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। फैक्ट्री में रबड़ का काम है और 90 पुरुष मजदूरों की भी 12 घण्टे की शिफ्ट है।" **सेक्युरिटी गार्ड :** "जे-147 सैक्टर-10 में कार्यालय वाली **पैन्थर सेक्युरिटी** कम्पनी गार्डों से 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी करवाती है। प्रतिदिन 12 घण्टे पर 30 दिन के 4000 रुपये बताते हैं पर देते 3500 हैं। कहते हैं कि ई.एस.आई., पी.एफ. काट लिया है जबकि फोटो नहीं लेते और कोई फार्म नहीं भरते।"

कल्पना फोरजिंग कामगार : "प्लॉट 34, 35, 36, 37 सैक्टर-6 स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में बनते माल को गुड़गाँव में **मारुति सुजुकी** और **हीरो होण्डा** फैक्ट्रियों को पहुँचाने के लिये कम्पनी ने 18 ड्राइवर रखे हैं। ड्राइवरों को 12 घण्टे रोज ड्युटी पर 26 दिन के 4000 रुपये देते हैं। ऑपरेटरों की तनखा बैंक में भेज देते हैं – उपस्थित होते हुये भी अनुपस्थितियाँ लगा कर कानूनी खानापूर्ति करते हैं और तनखा 2800 रुपये देते हैं।"

चक्रव्यूह....(पेज एक का शेष)

'चैलेन्जर' अन्तरिक्ष यान 1986 में ध्वस्त हुआ था। बाद में अमरीका सरकार के अन्तरिक्ष अभियान वैज्ञानिकों ने बताया था कि खुशकिस्मती से 'चैलेन्जर' द्वारा भेजे जा रहे सामान के तौर पर प्लूटोनियम को स्थगित कर दिया गया था। अगर.... अगर परमाणु कार्यक्रमों का वह कचरा अन्तरिक्ष यान के सामान में होता तो 'चैलेन्जर' का ध्वंस प्लूटोनियम को वायुमण्डल में बिखेर देता और इस प्रकार पृथ्वी पर प्रत्येक व्यक्ति की कैंसर से सम्भावित मृत्यु का एक प्रबन्ध कर जाता। अणु बम बनाना और अणु विद्युत उत्पादन अपने संग प्लूटोनियम जैसा खतरनाक कचरा लिये हैं। पृथ्वी पर इस कचरे को ठिकाने लगाना बेहद खतरनाक-बेहद महँगा पाने के बाद इसे अन्तरिक्ष में फेंकने का सिलसिला आरम्भ किया गया है। सम्भावनाओं का खेल खेलते वैज्ञानिकों ने लगातार दो अन्तरिक्ष यानों के ध्वंस की सम्भावना बहुत कम सोच कर 'चैलेन्जर' के तत्काल बाद वाले अन्तरिक्ष यान के सामान के तौर पर उस प्लूटोनियम को अन्तरिक्ष में भेजा। क्या 'कोलम्बिया' अन्तरिक्ष यान पर प्लूटोनियम जैसा कचरा था? अमरीका सरकार नहीं बतायेगी। दस-बीस वर्ष बाद मृत्यु की बारिश से हमें यान पर खतरनाक कचरा होने का पता चलना कैसा रहेगा? (फमस अक्टूबर 04 से)

और, बमों द्वारा सुरक्षा

मार्च 05 में अमरीका के टेक्सास प्रान्त में एक परमाणु बम लगभग फट गया था। यह बम जापान में हीरोशिमा नगर पर 1945 में गिराये एटम बम से सौ गुणा शक्तिशाली था। बाल–बाल टले इस महाविनाश के तथ्य को गुप्त रखा गया। बीस महीने बाद, फैक्ट्री में सुरक्षा के नियमों का उल्लंघन करने के आरोप में नवम्बर 06 में अमरीका सरकार ने परमाणु बम निर्माण करने वाली कम्पनी, बी डब्लू एक्स टेक्नोलोजीज पर 50 लाख रुपये का जुर्माना किया तब भयावह हालात की थोड़ी–सी जानकारी सामने आई है। परमाणु बमों के निर्माण वाली फैक्ट्री में काम करते तकनीकी वरकरों ने कार्य की खराब स्थितियों को लगभग हो गये विस्फोट के लिये जिम्मेदार ठहराया है। परमाणु बम बनाने वाली फैक्ट्री में प्रतिदिन 12 से 16 घण्टे कार्य करना अनिवार्य है, सप्ताह में 72–84 घण्टे एटम बम बनाने में खटना! अधिक बुरी सूचना यह है कि कम्पनी ने 2007 के लिये परमाणु-बमों के उत्पादन के लक्ष्य में 50 प्रतिशत की वृद्धि की है। (फमस फरवरी 07 से)

गुड़गाँव से -

ऋचा एण्ड कम्पनी मजदूर : " प्लॉट 239 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में ओवर टाइम के लिये जबरन रोकते हैं। सुबह 9 बजे शिफ्ट आरम्भ होती है और रात 11-12 तक, अगली सुबह के 6 बजे तक काम करवाते हैं। गाली देते हैं, रोटी के लिये पैसे नहीं देते। महीने में 150-200 घण्टे ओवर टाइम। अब तक ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से करते थे पर अब कम्पनी ने कहा है कि पहली जून से प्रतिदिन के 2 घण्टे ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से और बाकी घण्टों का सिंगल रेट से होगा।"

राधनिक एक्सपोर्ट श्रमिक : "प्लॉट 294 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में 1000 मजदूर सुबह 9½ से रात 10½, रात 2 बजे तक काम करते हैं। महीने में 150 घण्टे ओवर टाइम। रात 2 बजे तक रोकते हैं तब रोटी के लिये 15 रुपये देते हैं। हस्ताक्षर दुगुनी दर पर करवाते हैं पर ओवर टाइम के पैसे देते सिंगल रेट से हैं। साहब गाली देते हैं। कम्पनी ने धमकाने-मारने के लिये फैक्ट्री में पहलवान रखे हैं, और पहलवानों को बुला लेते हैं।" **वीवा ग्लोबल कामगार :** "प्लॉट 413 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9½ से रात 11, रात 2 बजे तक काम। महीने में 200-250 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। ई.एस.आई. व पी.एफ. पहले दिन से काटते हैं और 3-3½ महीने में नौकरी से निकाल देते हैं। फण्ड का फार्म नहीं भरते, फण्ड का नम्बर बताते नहीं – हमारा फण्ड मारा जाता है, हड़प लिया जाता है। दादागिरी करते हैं, गाली देते हैं। मई की तनखा 14 जून को दी।"

एलाइड मेडिकल वरकर : " प्लॉट 76-77 उद्योग विहार फेज-4 स्थित फैक्ट्री में मशीन शॉप में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और बाकी विभागों में 8 घण्टे की जनरल शिफ्ट। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 2800 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

एस्पिरिट क्लोथिंग मजदूर : " प्लॉट 549 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2200 रुपये। ऑपरेटरों को 8 घण्टे के 125-130 रुपये। हैल्परों की तनखा से 150 रुपये ई.एस.आई. व पी.एफ. के नाम से काटते हैं, ऑपरेटरों के नहीं काटते। शिफ्ट सुबह 9 से रात 8 की, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

सेक्युरिटी गार्ड : " डुण्डाहेड़ा में कार्यालय वाली **स्विफ्ट सेक्युरिटी** 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी करवाती है। कोई छुट्टी नहीं। रोज 12 घण्टे पर 30 दिन के 4465 रुपये। मई की तनखा 18 जून को दी।" **ऋचा श्रमिक :** "प्लॉट 192 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 बजे काम आरम्भ होता है और साँय सवा चार के बाद रात 1 बजे तक कोई ब्रेक नहीं देते। प्रतिमाह 100-150 घण्टे ओवर टाइम। अब तक भुगतान दुगुनी दर से करते थे पर अब कहा है कि पहली जून से प्रतिदिन के 2 घण्टे ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से करेंगे और बाकी के घण्टों का सिंगल रेट से।" **रोलेक्स ऑटो कामगार :** "प्लॉट 303 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 8½, रात 2 बजे तक काम। महीने में 150-200 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। रात 2 बजे तक रोकते हैं तब भी रोटी के पैसे नहीं देते। हैल्परों को देते 2800 रुपये तनखा हैं पर हस्ताक्षर 3510 पर करवाते हैं। वैल्डरों को देते 3500 रुपये हैं पर हस्ताक्षर 4500 पर करवाते हैं। जाँच वालों के आने पर हैल्परों को फैक्ट्री से निकाल देते हैं। मई की तनखा 12-15 जून को दी।" **अचिवर क्रियेशन वरकर :** " प्लॉट 501 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से साँय 7 की ड्युटी है। कम्पनी ने 10 घण्टे = 8 घण्टे कर रखा है।" **इन्टरएक पायल मजदूर :** "प्लॉट 645 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में 3 ठेकेदारों के जरिये रखे हैल्परों की तनखा 2500 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। चिक-चिक बहुत करते हैं, गाली देते हैं।" **गौरव इन्टरनेशनल श्रमिक :** "प्लॉट 208, 236 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्रियों में ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से था पर अब कम्पनी ने कहा है कि पहली जून से प्रतिदिन के 2 घण्टे ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से करेगी और बाकी के घण्टों का सिंगल रेट से।" **आर एल खन्ना एण्ड कम्पनी कामगार :** "प्लॉट 289 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9½ से रात 9-10 की शिफ्ट है। जिन्हें स्थाई हैल्पर कहते हैं उन्हें 3500 रुपये फिक्स देते हैं, ओवर टाइम का एक पैसा नहीं देते। जिन्हें कैजुअल हैल्पर कहते हैं उनकी तनखा 2400 रुपये है और ओवर टाइम के 15 रुपये प्रतिघण्टा देते हैं।" **प्रिमियिम मोल्डिंग वरकर :** " प्लॉट 185 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में जिन हैल्परों की तनखा 2500 रुपये है उनकी ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। जिन हैल्परों की तनखा 3500 है उनके 550 रुपये ई.एस.आई. व पी.एफ. के नाम से काटते हैं। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और ओवर टाइम के पैसे मात्र 6½ रुपये प्रतिघण्टा।" **किशोर एण्ड कम्पनी मजदूर :** "प्लॉट 344 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2500 रुपये।" **ईस्टर्न मेडिकिट श्रमिक :** " प्लॉट 205 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में हम कैजुअल वरकरों को मई की तनखा 15 जून को दी। हमारी 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और मई के ओवर टाइम के पैसे 10 रुपये प्रतिघण्टा के हिसाब से हमें 25 जून को दिये।" **मनीसेन्टर कामगार :** "प्लॉट 212 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9½ से रात 12 तक तो रोज रोकते हैं, रात 2 बजे तक भी काम। महीने में 200 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। महीने में 400-500 रुपये गड़बड़ी कर हड़प जाते हैं। छोड़ने पर किये हुये काम के पैसे नहीं देते। हैल्परों की तनखा 2500 और कारीगरों की 3000-3500 रुपये।"

कृष्णा लेबल मजदूर : " प्लॉट 162 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 9½ घण्टे=8 घण्टे।"

शिवालिक प्रिन्ट्स

एस पी एल इन्डस्ट्रीज मजदूर : "प्लॉट 47-48 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में पूरे वर्ष 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट में काम होता है। मेनटेनैन्स वरकरों की तो वर्ष के 365 दिन 12 घण्टे ड्युटी रहती है। आमतौर पर मई-जुलाई के दौरान काम ढीला होता है तब शनिवार व रविवार की छुट्टी कर देते हैं और बाकी 5 दिन 12-12 घण्टे की शिफ्ट. .... छुट्टी कम्पनी स्वयं करती है और ओवर टाइम के घण्टों में से शनिवार के 8 घण्टे घटा देती है, महीने में 32-40 घण्टे कम कर देती है। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। अगस्त-मार्च के दौरान काम का ज्यादा दबाव होता है तब रविवार को भी छुट्टी नहीं और मजदूरों को 36 घण्टे भी लगातार रोकते हैं। फैक्ट्री में कपड़ों की रंगाई होती है और काम ज्यादा होता है तब रात को प्लॉट 47 और 48 के बीच की सड़क पर छह इन्च रसायन युक्त पानी भरा रहता है, डाइंग विभाग में भी पानी भर जाता है – बिजली के तार ऊपर पाइपों के सहारे! रसायनों वाले पानी से पैर सड़ जाते हैं। दिन में पानी निकलवा देते हैं।

" फैक्ट्री में भाप का काम है। तापमान 50-60 डिग्री रहता है, माल पकाने के लिये कभी-कभी 70-80 डिग्री भी। हर समय पसीने से तर रहते हैं। डाइंग विभाग में एक भी पँखा नहीं, रोटरी मशीनों पर एक भी पँखा नहीं। अन्दर-बाहर होते रहते हैं। फैक्ट्री में भोजन अवकाश है ही नहीं, भोजन करने के लिये स्थान भी नहीं है। मशीनें चलती रहती हैं, एक-दूसरे को सम्भलवा कर बगल में नीचे बैठ कर रोटी खाते हैं। कैन्टीन थी..... बाहर कर दी है।

" प्लॉट 47-48 में मैनेजर-सुपरवाइजर-क्लर्क 100 हैं। स्थाई मजदूर के तौर पर 100 ऑपरेटर हैं और उन्हें भी स्टाफ कहते हैं। कैजुअल वरकर 300 हैं – 6 महीने में ब्रेक दिखा देते हैं जबकि वरकर काम करता रहता है, उसी विभाग में काम करता रहता है। मात्र यह करते हैं कि दूसरे विभाग में भर्ती दिखा देते हैं। तीन ठेकेदारों के जरिये 300 से ज्यादा मजदूर रखे हैं। फोल्डिंग विभाग देखें। यहाँ कम्पनी ने स्वयं 4 लोग रखे हैं – मास्टर, कम्प्युटर कर्मी, दो माल डिस्पैच वाले। ठेकेदार के जरिये 60 मजदूर रखे हैं। हैल्परों की साप्ताहिक छुट्टी नहीं, कोई छुट्टी नहीं। हैल्परों को 12 घण्टे रोज पर 30 दिन के 3300-3500 रुपये। महीने में एक-दो हाजिरी ठेकेदार खा जाता है। तनखा देरी से, 20 तारीख के बाद। तीन मंजिल वाली शिवालिक प्रिन्ट्स फैक्ट्री में कैजुअल वरकरों और ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को बोनस देते ही नहीं।"

दिल्ली से..(पेज चार का शेष)

ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। सिलाई कारीगर पीस रेट पर हैं। महीने में 2-4 बार तो पीस रेट पर झगड़ा हो ही जाता है। कारीगर काम बन्द कर देते हैं। बहुत रफ्तार से काम करते हैं, 8 घण्टे में 150-200 रुपये बनें उस रेट पर काम शुरू करते हैं। कम्पनी ने स्वयं 10 मजदूर रखे हैं और बाकी को 4 ठेकेदारों के जरिये रखा है।"

श्रम आयुक्त, हरियाणा सरकार ने चण्डीगढ से 27.5.2008 को जारी पत्र द्वारा हरियाणा के श्रम विभाग अधिकारियों को सूचना दी है कि 01.01.08 से महँगाई भत्ते के 76 रुपये श्रमिकों को देय हैं। *प्रतिदिन 8 घण्टे काम और सप्ताह में एक दिन की छुट्टी पर 01.01.2008 से हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित कम से कम तनखा प्रतिमाह इस प्रकार हैं : अकुशल मजदूर (हैल्पर) 3586 रुपये (8 घण्टे के 138 रुपये); अर्धकुशल अ 3716 रुपये (8 घण्टे के 143 रुपये); अर्धकुशल ब 3846 रुपये (8 घण्टे के 148 रुपये); कुशल श्रमिक अ 3976 रुपये (8 घण्टे के 153 रुपये); कुशल श्रमिक ब 4106 रुपये (8 घण्टे के 158 रुपये); उच्च कुशल मजदूर 4236 रुपये (8 घण्टे के 163 रुपये)। कम से कम का मतलब है इन से कम तनखा देना गैरकानूनी है।* जनवरी-जून 08 के लिये डी.ए. के 456 रुपये हुये।

ओरियन्ट पँखे

ओरियन्ट फैन मजदूर : " प्लॉट 11 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में आज, 18 जून को **वॉल मार्ट** के प्रतिनिधि आ रहे हैं इसलिये ठेकेदारों के जरिये रखे हम मजदूरों को फैक्ट्री नहीं आने को कह दिया था। वॉल मार्ट वाले वर्ष में एक बार फैक्ट्री आते हैं तब ऐसा ही होता है। पिछले वर्ष यहाँ वॉल मार्ट के लिये दो लाख पँखे बने थे।

" ओरियन्ट फैन फैक्ट्री में चार प्रकार के मजदूर हैं – स्थाई, कैजुअल, जॉब कार्ड वाले, बिना जॉब कार्ड वाले। जॉब कार्ड वाले थोड़े-से हैं और उन्हें भी ठेकेदारों के जरिये रखा है पर उनका ब्रेक नहीं होता, उन्हें सप्ताह में 18 घण्टे ओवर टाइम के पैसे दुगुनी दर से देते हैं, 18 घण्टे से अधिक वाले ओवर टाइम को एक्स्ट्रा टाइम कहते हैं और उसके पैसे सिंगल रेट से। स्थाई मजदूर आमतौर पर पीस रेट पर हैं। कैजुअल वरकरों को ओवर टाइम व 'एक्स्ट्रा टाइम' के पैसे दुगुनी दर से। बिना जॉब कार्ड वाले ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को 8 घण्टे के 90-130 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, ओवर टाइम-एक्स्ट्रा टाइम के पैसे सिंगल रेट से। कैजुअल की भर्ती के लिये 200-400 रुपये रिश्वत लेते हैं। जॉब कार्ड सिफारिशी को ही – 10 जून से लीडरों ने इस पर हँगामा किया है।

" फैक्ट्री में वर्ष में 24 लाख पँखे बनते हैं। मध्य-जुलाई से अक्टूबर-अन्त तक काम कम रहता है, बाकी समय महीने में 100-175 घण्टे ओवर टाइम काम होता है। कम्पनी महीने में 72 घण्टे को ओवर टाइम कहती है और उससे ऊपर वाले समय को एक्स्ट्रा टाइम। कई शिफ्टें हैं : सुबह 6 से, 7 से, 7½ से, 8½ से, साँय 6 से, रात 8 से। ब्लेड विभाग, पेन्ट शॉप, एयर फ्लो विभाग, पैकिंग में 12-12½ घण्टों की शिफ्ट हैं।

" ओरियन्ट फैन फैक्ट्री में कैन्टीन है। यहाँ 50 स्थाई मजदूरों को 50 पैसे में चाय और 3 रुपये में थाली देते हैं। कैजुअल तथा ठेकेदारों के जरिये रखे 450 वरकरों को एक रुपये में चाय और 6 रुपये में थाली देते हैं।"

दिल्ली से -

ग्रोमेक्स इण्डिया मजदूर : " प्लॉट 983 जी-ब्लॉक नरेला स्थित फैक्ट्री में 100 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 2400 और ऑपरेटरों की 3000 रुपये। ई.एस. आई. और पी.एफ. किसी मजदूर की नहीं। हैल्परों को गाली देते हैं। नरेला इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित दो-तीन हजार फैक्ट्रियों में हैल्परों की तनखा 2000-2400 रुपये है और ई.एस. आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

रॉयल इन्फ्राइड्री श्रमिक : " डी-114 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन देते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. भी सब मजदूरों के हैं। महीने में 100-150 घण्टे ओवर टाइम के और उनका भुगतान दुगुनी दर से। पर काम का भारी दबाव रहता है । डायरेक्टर संजय जैन हर समय मजदूरों के सिर पर खड़ा रहता है और कम्पनी रोज टारगेट बढा देती है। टारगेट के लिये बहुत ज्यादा दबाव डालते हैं – रोज 10-20 को निकालते हैं और 10-20 की भर्ती करते हैं। सुबह 8½-9 से रात 1 बजे तक, अगले रोज सुबह 6 बजे तक रोकते हैं तब भी रोटी के लिये पैसे नहीं देते, एक कप चाय भी नहीं देते।"

यूनिस्टाइल कामगार : " बी-51 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में काम करते 175 मजदूरों में किसी की भी ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। धागा काटने वाली 25 महिला मजदूरों की साप्ताहिक छुट्टी नहीं, तीसों दिन काम पर 2200 रुपये। सुबह 9 से साँय 6 ड्युटी के बाद रात 8-9 तक रोकते हैं, **(बाकी पेज तीन पर)**

जर्मनी से -

..... मर्सीडीज वाले परिसर में ही थिसेन-क्रुप फैक्ट्री में काम करने लगा हूँ। हम शीट मैटल का काम करते हैं, प्रेस शॉप में सब प्रकार के धातु के पुर्जे बनते हैं। हम मर्सीडीज के संग ऑडी, फॉक्स वैगन, स्कोडा, फोर्ड, रिनोल्ट कारों के पुर्जे भी बनाते हैं। हम मैटल ग्राइन्डिंग का कार्य करते हैं और आपूर्ति की स्थानीय लड़ी में हमारा विभाग प्रारम्भिक स्तर का है। आधिकारिक तौर पर हम जैड ए ए द्वारा रखे गये हैं पर थिसेन में अन्य जैड ए ए अस्थाई मजदूरों को दिया जाने वाला 94 सेन्ट प्रतिघण्टा वाला बोनस हमें नहीं दिया जाता क्योंकि मैटल ग्राइन्डिंग विभाग थिसेन ने जैड ए ए को कार्य करवाने के लिये दिया हुआ है। हम ठेकेदार के जरिये रखे भी गये हैं और नहीं भी रखे गये हैं! कर-पूर्व 6 $^{2}/_{5}$ यूरो प्रतिघण्टा हमारा वेतन है जो कि 800 यूरो प्रतिमाह से कम पड़ता है अगर हम प्रतिमाह दो सप्ताह रात पाली में काम नहीं करें। यदि मैं रोज बीस सिगरेट पीता हूँ (सब मजदूर यह करते हैं !) तो सिगरेटों पर मेरा खर्च 130 यूरो प्रतिमाह हुआ। अगर एक कप कॉफी और एक समय का भोजन कैन्टीन में लेते हैं तो यह महीने में 150 यूरो के हुये। काम सख्त है, ढेरों शोर – कान बन्द करने के लिये हमें प्लग मिलते हैं पर फिर भी शिफ्ट समाप्ति पर हमारे कान गूँजते रहते हैं। धातु की धूल बहुत रहती है – हमें मास्क मिलते हैं पर दो घण्टे बाद थूक काला निकलता है और कुछ मजदूरों की नाक से रक्त बहता है। एक शिफ्ट में हर मजदूर को 700 के करीब मैटल पार्ट्स ग्राइन्ड करने पड़ते हैं। भारी औजार के साथ कलाईयों को 8 घण्टे मोड़ने और घुमाने से हमारे जोड़ सूज जाते हैं। सूचना-पटल पर मैनेजमेन्ट प्रतिदिन का उत्पादन दर्शाती है और कहती है कि निर्धारित उत्पादन पूरा नहीं हुआ तो हमें शनिवार को भी आना होगा। ऐसा होने पर 13 दिन बिना किसी छुट्टी के हमें लगातार काम करना होगा क्योंकि तब हम शनिवार को दोपहर 2 बजे तक काम करेंगे और फिर रविवार को रात 10 बजे हमारी रात पाली आरम्भ होती है जो कि आगामी शनिवार की सुबह 6 बजे तक रहती है। हम लोगों ने तालमेल से शनिवार को काम करने से इनकार कर दिया है। काम बुरा है इसलिये कुछ लोग तो दो दिन में छोड़ जाते हैं। मैं लगा तब विभाग में हम 20 थे और अब हम 12 हैं। जैड ए ए मैनेजर और थिसेन का एक इंजिनियर अक्सर इर्द-गिर्द खड़े रहते हैं और हमारे द्वारा प्रति पीस लिये जाते समय को लिखते रहते हैं ताकि शिफ्ट के टारगेट को बढा सकें। अधिकतर मजदूर युवा हैं, बीस-बाइस वर्ष के हैं और अपने माता-पिता के साथ रहते हैं। अधिकतर ने प्रशिक्षण लिया है पर उन्हें अच्छी नौकरी नहीं मिली..... मैकेनिक बनने के लिये तीन वर्ष सीखने के बाद अब वे दिन में, रात में सैंकड़ों बार 30 सैकेन्ड वाली क्रिया दोहराते हैं और हताश-निराश हैं। हर शिफ्ट में हर एक द्वारा किया उत्पादन लिख कर मैनेजर को देने का प्रावधान है। कुछ मजदूर 300 पीस तो कुछ 1200 पीस एक शिफ्ट में तैयार करते हैं फिर भी दो शिफ्टों के लोगों ने अलग-अलग सँख्या नहीं लिखने और औसत लिखने का निर्णय किया। यह चर्चाओं के बाद हुआ – "फिर तो मैं उसके लिये काम करता हूँ क्योंकि वह इतनी बार सिगरेट पीने जाता है" आदि बातों के बाद अन्ततः हम ने निर्णय किया कि अलग-अलग सँख्या नहीं देंगे। समय की गणना करने वालों के आने पर हम ने पशुओं की आवाजें निकालनी भी शुरू कर दी हैं क्योंकि हमें लगता है कि हम चिड़ियाघर में हैं – वैसे भी शोर रहता है और हम मास्क पहने होते हैं। यह आश्चर्य की बात है पर जब मैं इन युवाओं और इनके गुस्से को देखता हूँ तो अक्सर मुझे गुड़गाँव में डेल्फी फैक्ट्री में पश्चिम बंगाल के युवा मजदूरों के बारे में सोचना पड़ता है जिनसे हम उनके कमरों पर मिले थे। और मुझे लगता है कि एक पराई दुनियाँ के प्रति भावनाओं तथा प्रतिक्रियाओं का एक जैसा होना मेरे मस्तिष्क के भ्रम नहीं हैं। मैं आशा करता हूँ कि यहाँ काम के दौरान मैं थिसेन मजदूरों के सम्पर्क में आऊँगा..... (1 यूरो = 68 रुपये)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73-2011